देश के सर्वांगीण विकास में हिंदी साधक है।

नरेश कुमार
रा.ज.सं., रूड़की

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।।

इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि अपनी भाषा के माध्यम से जो वार्तालाप किया जाता हैं वह सार्थक और व्यावहारिक होता है।

प्रस्तावना

i) जिस प्रकार किसी राष्ट्र की सम्प्रभुता एवं स्वाभिमान का प्रतीक राष्ट्रीय ध्वज एवं राजचिहन होता है, ठीक उसी प्रकार राष्ट्र की संस्कृति एवं भाषा भी उसके आत्म गौरव और अस्मिता का प्रतीक होती है।

ii) संविधान सभा के सम्मुख एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह था कि भारत की राजभाषा किस भाषा को बनाया जाए। पर्याप्त विचार विमर्श के उपरांत 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी इसीलिए हम लोग प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाते हैं।

iii) आज हिंदी भाषा को कुछ लोगों ने द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकार करना शुरू कर दिया, किंतु यह बात पूर्ण रूप से अव्यावहारिक है प्रत्येक राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा होती है जिसमें उस राष्ट्र का संपूर्ण कार्य उसी भाषा में होता है। हिंदी की वर्णमाला व शब्दावली अपने में पूर्ण सार्थक है इसकी ध्वनि और उच्चारण शुद्ध रूप में होता है जो शब्द लिखा जाता है वही पढ़ा व बोला जाता है यह हिंदी भाषा की सार्थकता है जबकि अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं है।

विशेषता

1. हिंदी भाषा की सबसे पहली व बड़ी विशेषता यह है कि इस भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को भी सम्मिलित किया गया है।
2. दूसरी विशेषता यह है कि हिंदी भाषा को शिक्षित व अशिक्षित, साक्षर, निरक्षर भली प्रकार समझ व बोल लेते है।
3. हिंदी भाषा देश के बहुसंख्यक लोगों द्वारा प्रयोग में लायी जाती है।
4. हिंदी भाषा का व्याकरण सरल एवं नियमबद्ध है तथा इसकी लिपि भी सुस्पष्ट एवं वैज्ञानिक है।

मैं यह कहना चाहता हूं कि साहित्यिक दृष्टि से भी हिंदी भाषा अत्यंत समृद्ध है। गोस्वामी तुलसीदास जी से लेकर आज के साहित्य तक हिंदी भाषा ने दिन–प्रतिदिन प्रगति की है।

उद्देश्य

हिंदी साहित्य एक उपदेशात्मक, रचनात्मक, सकारात्मक, उद्देश्य को लेकर कार्यरत है अंग्रेजी शासन में हिंदी कवियों, लेखकों ने साहित्य के द्वारा देश में स्वतंत्रता के लिए नया आंदोलन प्रस्तुत किया। यदि हम **जयशंकर प्रसाद** की प्रयाग गीत को ही लें तो उससे हमें ज्ञात हो जाएगा कि हिंदी साहित्य की क्या विशेषता है

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयं प्रभा समुज्जला, स्वतंत्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।।

हिंदी साहित्य के माध्यम से जयशंकर प्रसाद ने स्वतंत्रता का आह्वान किया जिससे वीरों के हृदय में स्वतंत्रता की भावना जागृत हो गई। यहां तक कि यदि हम हिंदी भाषा को अपनाएं तो हमें इसके कवियों और लेखकों द्वारा बलिदान की भावना जागृत होती दिखाई देती हैं। हिंदी भाषा में **माखनलाल चतुर्वेदी ने फूल के माध्यम से बलिदान की भावना को जाग्रत किया :**

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।।

मैं पूछना चाहता हूं कि क्या इस प्रकार की भावनाएं हिंदी भाषा के अतिरिक्त अन्य साहित्य में मिलेंगी। मैं समझता हूं अन्य साहित्य में नहीं, हिंदी अपने में पूर्ण भाषा है इसका विकास प्रचार–प्रसार हमारा प्रथम उद्देश्य है।

'मदन मोहन मालवीय जी ने **हिंदी, हिंदू व हिंदूस्तान'** की भावना को सर्वोपरि माना और हिंदी भाषा को भारत की प्रमुख भाषा के रूप में देखा। हमारे भारत में हिंदी भाषिक क्षेत्र सर्वाधिक हैं जहां हिंदी बोली, पढ़ी व लिखी जाती है। इसलिए मेरा मन्तव्य है कि हम हिंदी के प्रयोग से अपने भारत को पूर्ण रूप से समृद्धशाली बना सकते हैं। यदि हम व्यापक रूप से देखें तो **हिंदी भारत के विकास में सर्वदा साधक थी, है और रहेगी।**

हिंदी भाषा का प्रयोग न करने वालों की प्रताड़ना करते हुए प्रसिद्ध कवि **गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' जी ने सत्य ही कहा है –**

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर पशु है। निरा और मृतक समान है।।